''सौन्दर्यलहरी''
''तन्त्र दृष्टि और सौन्दर्य सृष्टि''
प्रभुदयाल मिश्र

समीक्षक – प्रो.मूंगाराम त्रिपाठी, एम.ए., एम.एड, सिद्धांत वाचस्पति)

सौन्दर्यलहरी – (श्री शंकराचार्यकृत संस्कृत शिखरिणी काव्य) का प्रारंभिक रोलाहिन्दी अनुवाद वर्ष 1990 में प्रकाशित होने पर म.प्र.संस्कृत अकादमी द्वारा प्रादेशिक व्यास पुरस्कार (रू. 10,000 दस हजार) के साथ सम्मानित हुआ था। अंग्रेजी साहित्य में एम.ए.श्री प्रभुदयाल मिश्र ने विगत वर्षों में 'सब के लिये गीता' और 'सबके लिये वेद', 'मैत्रेयी' उपन्यास तथा 'योग के आध्यात्मिक नियम' आदि ग्रंथ लिखे हैं। इसी क्रम में उनका मौलिक चिन्तन और शक्तिपात दीक्षा का वैभव उन्हें ''सौन्दर्यलहरी'' के विस्तार के लिये प्रेरित करता रहा। इसका प्रथम अनुवाद ही बहुत सम/श्रेष्ठ था। अब इसमें उन्होंने 'आनंदलहरी' और 'सौन्दर्यलहरी' के साथ 'आनंदलहरी स्तोत्रम्' के 20 छंद तथा 'योग और तंत्र में प्रयोज्य 103 यंत्र और उनके तांत्रिक प्रयोग भी, सचित्र व्याख्या सहित जोड़े हैं। ईसा की 6 वीं 7 की शताब्दियों में भारत ऐसे शतशः तन्त्रों/यन्त्रों से व्याप्त था, जिसने देवनागरी लिपिके गठन, संवर्धन में भी सहायता की थी। मिश्र जी ने इस सबको समझा है। वस्तुतः सौन्दर्यलहरी, समयाचार तंत्रसाधना का ग्रंथ है, जिसका केन्द्रीय विषय श्रीविद्या है। इसकी लक्ष्मीधरी टीका में लिखा है–

'यत्रास्ति भोगो न हि तत्र मोक्षो, यत्रास्ति मोक्षो नहि तत्र भोगः।

श्री सुन्दरी साधन पुंगवानां, योगश्चमोक्षश्च करस्थ एव।।

श्रीविद्या को प्रकाशित करने वाला श्री शंकर का यह सौन्दर्योपक्रम, एक महान तपस्वी का सृष्टिकर्म है–इसमें जड़, चेतन, स्थूल सूक्ष्म तथा बाह्य और आन्तर समानान्तर चलते हुए लोक का अतिक्रमण कर, देहातीत, भावातीत, गुणातीत और द्वन्द्वातीत हो जाते है।

यथा – ''मनस्त्वं व्योमत्वं, मरुदसि मरुत्सारथिरसि–

त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम।।

त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा–

चिदानन्दाकारे, शिवयुवति भावेन विभृषे ।। 35

आचार्य श्री राघा वल्लभ त्रिपाठी ने सही कहा है– ''सौन्दर्यलहरी सभी कुछ है। यह ग्रंथ एक पहेली है–तंत्र आगम, उत्तमकाव्य, दर्शनशास्त्र, ज्ञान का सागर और साधना पद्धति, सभी एक साथ है। महाकवि कालिदास के मेघदूत जैसे एक दो अपवादों को छोड़ दें तो विश्वसाहित्य में कदाचित एक यही ऐसा काव्य है जो मुक्तक और प्रगीत के अनुपम भाव सौन्दर्य व लालित्य के साथ महाकाव्य और महावाक्य भी बनता है। वास्तव में पूरे विश्व को नवीन रूपान्तरण के लिये जो महाशक्तियां सक्रिय है– उसकी अभिव्यक्ति के एक सहज सुन्दर माध्यम श्री मिश्र जी भी बन गये हैं।''

श्री अरविंद घोष का सावित्री महाकाव्य भी श्री शंकर की इस सौन्दर्य लहरी के समकक्ष दर्शन का संवाहक है, जहां देवी के सौन्दर्य की संस्तुति कवि ने इस प्रकार की है :–

"THE FORMLESS AND THE FORMED WERE JOINED IN HER
IMMENCITY WAS EXCEEDED BY HER LOOK;
A FACE REVEALED THE CROWDED INFINITE,
THE BOUND LESS JOY THE BLIND WORLD FORCES SEEK,
HER BODY OF BEAUTY MOONED THE SEAS OF BLISS."

इन कवियों ने सुन्दरता को शरीर के स्तर से ऊपर उठाकर प्रकृति से तदात्मीकरण का अभिनव कार्य किया है। इसमें सार्वभौमिक सत्य की स्वीकृति है। भारतीय दर्शन के धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के समान, इसमें सत्यंशिवंसुन्दरं की सार्थकता प्रतिबिम्बित होती है।

आनन्दलहरी (स्वोत्रम्) भी कितना सुन्दर है। देखें–

''मुखे से ताम्बूलंनयनयुगले कज्जलकला

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।

स्फुरत्कांची शाटी, पृथुकटितटे हाटकमयी–।।

भजामित्वां गौरीं नगपाति किशोरीं अविरतम् ।।3।।

''हे गौरी! तुम्हारे मुख में ताम्बूल, दोनो नेत्रों में काजल, मस्तक पर केशर, गले मे मोतियों का हार, मोटी कटि में स्वर्ण साडी पर चमकती करधनी शोमित है। हे हिमालय की पुत्री मैं तुम्हे सदा भजता हूं।''

अंत में तंत्रागम मे प्रयुक्त यंत्रों के 103 चित्र उनकी व्याहृतियों के साथ दिये गये है। क्या ये व्याहातियां ही मंत्र भी है ? क्योंकि मंत्र अलग से नहीं दिये गये हैं। कुल 136 पृष्ठों में सजिल्द सुंदर मुखपृष्ठ के साथ उत्तम कागज में मूल्य एक सौ बीस रूपये मात्र है। प्रकाशक है विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी ।

90, महादेव एपार्टमेन्ट, भोपाल